मृत्यु का क्या भरोसा

सुथरे शाह जी के बारे में यह प्रसिद्ध है कि वे एक रोटी बनाते थे। उसे खाने के पश्चात् ही दूसरी रोटी तवे पर डालते थे। एक बार एक संत ने पूछा- बाबाजी, आप एक रोटी बनाते हो उसे खाकर दूसरी रोटी तवे पर डालते हो। आप इकट्ठी बनाकर क्यों नहीं रख लेते? क्या इसके पीछे भी कोई रहस्य है? क्योंकि संतो की हर बात में कोई न कोई रहस्य अवश्य छिपा रहता है

ज्यों केले की पात में, पात पात में पात।
त्यों संतन की बात में, बात बात में बात ।।

सुथरे शाह जी ने सुना लंबी गहरी सांस ली व मौन हो गए। उनकी आँखों में आँसू भर आए। उठ कर चलने लगे तो संत ने फिर कहा- बाबाजी आप हमसे कुछ छिपा रहे हैं। आप बताइए तो सही इसका रहस्य क्या है?

तब सुथरे शाह जी बोले - एक बार हम पटियाला के मिश्री बाजार में भिक्षा लेने गए। वहाँ एक सेठ भोजन कर रहा था। हमने भिक्षा पात्र आगे बढ़ाया तो सेठ ने कहा- पहले अगली हट्टी से भिक्षा ले आइए। जैसे ही हमने अगली दुकान से भिक्षा लेकर वापिस सेठ की दुकान पर पाँव रखा तो देखा कि वह सेठ मर चुका था, रोटी का ग्रास उसके मुँह में रह गया था। तब से हम एक रोटी बनाते हैं और खाते हैं- क्योंकि

अख फड़कनी न मिले, मुख विच रहे गराह ।
लख लानत भाई सुथरिया जे दम दा करे वसाह।।

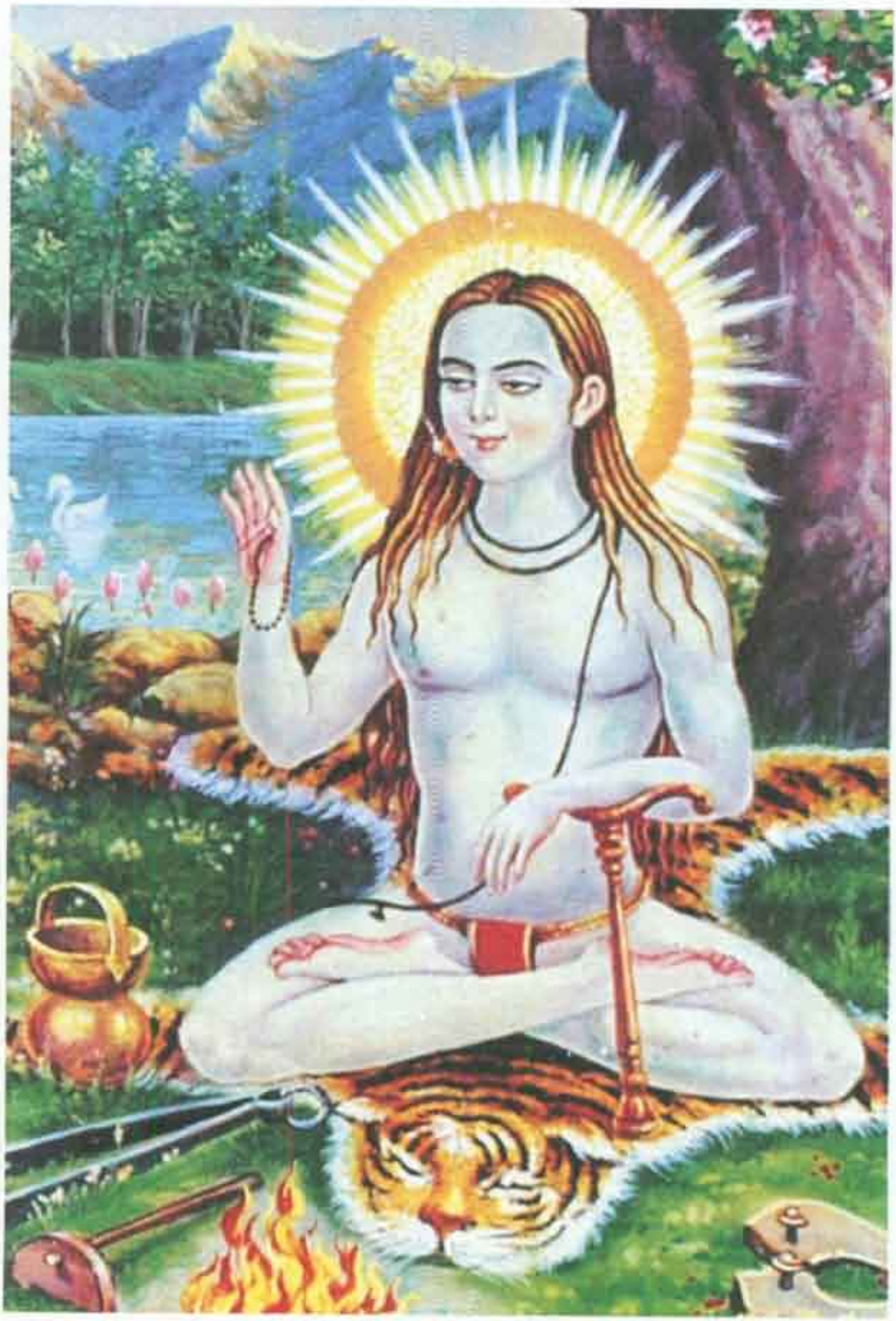

भगवान श्रीचन्द्र